Notes

पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, एवं पाठ्य पुस्तकों के अन्त: सम्बन्ध को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है।

1:- पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, एवं विषय वस्तु से सम्बन्धित विधियों, उद्देश्यों, सिद्धान्तों का वर्णन किया जाता है। जब पाठ्य पुस्तक में उन्हे व्यवहारिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। पाठ्य पुस्तक द्वारा विषय वस्तुओं को अवबोध छात्रों में सरलता हो जाती है।

2:- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के अन्तर्गत विषयों की उपयोगिता पर पूर्ण प्रकाश डाला जाता है। पाठ्य पुस्तक में पाठ्यवस्तु का व्यवहारिक उपयोग का उल्लेख किया जाता है।

3:- पाठ्य वस्तु के अभाव में पाठ्यचर्या के प्रकरणों के शिक्षण को सम्पन्न करना अत्यन्त कठिन कार्य है। जबकि पाठ्य पुस्तक के माध्यम से सभी प्रकरण सही बोधगम्य बन जाता है।

4:- पाठ्य चर्या की विषय वस्तु का पाठ्यपुस्तकों की व्याख्या, स्पष्टीकरण, उद्देश्यों आदि की सहायता से सरली करण किया जाता है।

Notes

पाठ्यचर्या
Syllabus

पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम के लिए परम्परागत शब्दो मे अपेक्षाकृत नवीन शब्द है। इसका प्रयोग पाठ्यक्रम में क्रमबद्ध, स्पष्ट विषयवार, विस्तृत रूप से किया जाता है।

पाठ्यचर्या पाठ्यक्रम के उस पक्ष को कहा जाता है जिसमें कक्षा के प्रयोग व्यवस्थित रूप से किया जाता है।

"पाठ्यचर्या एक कार्यविधि प्रदर्शिका होती है जो किसी कक्षा किसी विषय के शिक्षण में सहायता के लिए किसी (शाला) विद्यालय विशेष व्यवस्था हेतु तैयार की जाती है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के लक्ष्य अपेक्षित परिणाम अध्ययन सामग्री प्रकार एवं विस्तार सहायक सामग्री पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ अनुपूरक पुस्तकों, शिक्षण विधियों, सहगामी क्रियाएं तथा उपलब्धि मापन और सुझाव भी सम्मिलित किये जाते है।"

प्रो० एस० के० दुबे के शब्दों में — "पाठ्यचर्या का आशय शिक्षण विषय की उस व्यवस्था रूप रेखा या क्रम है, जो की उस विषय की उपयोगिता, आवश्यकता एवं महत्व से सम्बन्धित होता है, जैसे विद्यालय, शिक्षक विद्यार्थी एवं समुदाय के उत्तरदायित्वों के माध्यम द्वारा का सर्वांगीण विकास हो।"

Notes

पाठ्य पुस्तकें (Text Book)

अनुदेशनात्मक समाग्री के रूप सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाले समाग्री पाठ्य-पुस्तके है। आधुनिक शिक्षा पद्धति पाठ्य-पुस्तको का महत्व सभी जानते है। पाठ्यक्रम की वास्तविक रूपरेखा को पाठ्य-पुस्तकों द्वारा ही विस्तार मिलता है। जिससे वह शिक्षक एवं छात्रों के दोनो के लिए सगुम हो जाते है।

डगलस -(Duglas) " अध्यापकों में बहुमत ने अंतिम विश्लेषण के आधार भूत पर पाठ्य पुस्तक को क्या और किस प्रकार पढ़ायेंगे की आधार शिला माना जाता है। "

लैन्ज " यह अध्यपन क्षेत्र की किसी शाखा की एक प्रमाणित पुस्तक है। "

बेकन (Bacon) " पाठ्य पुस्तक कक्षा प्रयोग हेतु विशेषज्ञों द्वारा सावधानी से तैयार की जाती है। यह शिक्षण विधियों में सुसज्जित होती है। "

Notes

पाठ्यक्रम के तथ्य

Facts of curriculum.

शिक्षा दो प्रकार की होती हैं।
1- समान्य और 2. विशिष्ठ शिक्षा
अतः पाठ्यक्रम भी दो प्रकार की होते हैं। होना चाहिए। एक वह तो समान्य शिक्षा से सम्बन्धित होता हैं तथा दूसरा वह बालक को विशिष्ठ शिक्षा के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करता हैं।

प्रथम को अनिवार्य पाठ्यक्रम और दूसरे को विशिष्ठ पाठ्यक्रम कहते हैं। आवश्यक या अनिवार्य : वह शिक्षा हैं, जो एक समान्य नागरिक के अपने दैनिक कार्यों को पूर्ण करने के लिए आवश्यक हैं, बालक समान्य जीवन के तैयारी कर लेता हैं।

शिक्षा आयोग ने भी यह अनुभव किया
१८. पाठ्यक्रम समाविष्ठ करना उपयुक्त समझा गया

"१८- पाठ्यक्रम उपयोगी कुशलताओं के विकास के उचित प्रकार रुचियों, अभिवृत्तियों, तथा मान्यताओं पर पर्याप्त बल नहीं देता इसलिए यह केवल आधुनिक आज व्यक्तियों के जीवन से भी असम्बन्ध हैं"

पाठ्यक्रम परिवर्तन के सम्बन्ध में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा आयोजित अनुशंसाएँ निम्नलिखित हैं

1- प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम स्थानीय परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Notes

2:- पाठ्यक्रम का स्तर राष्ट्रव्यापी होना चाहिए इसमें ज्ञान, अवबोध, कौशल, मूल्य, तथा अभिवृत्तियों का विकास होना आवश्यक है।

3- शिक्षा प्रशासकों, शिक्षाशास्त्रियों, अभिभावकों, तथा नियोजकों को विद्यालय को पाठ्यक्रम का स्तर निर्धारित करने में सहयोग देता है।

4:- शिक्षा की प्रक्रिया व्यक्ति विकास, सामाजिक विकास ~~विश्व बन्धुत्व~~ बन्धुत्व के सन्दर्भ में ह्रास के अभिवृत्ति के साथ-साथ चलनी चाहिए।

5:- राज्य शिक्षा संस्थानों में एन०सी०ई०आर०टी० की सहायता से अपेक्षित विकास को यथोचित स्थान मिलना चाहिए।

पाठ्यक्रम का महत्व

पाठ्यक्रम एक बहुमुखी पाठ्यक्रम है। जिसमें विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम कों का समावेश होता है। पाठ्यक्रम के कुछ विषय अनिवार्य होते हैं। कई विषय ऐसे होते हैं। जिसमें कुछ विद्यार्थी अपने रुचियों एवं क्षमताओं के ~~सा~~ अनुसार ~~साथ~~ चुन सकते हैं।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज दोनों का विकास करना प्रत्येक